डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

पाठ्य सामग्री,

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा, प्रथम वर्ष, द्वितीय पत्र के लिए।

दिनांक- 04.07.2020

(व्याख्यान संख्या- 40)

* सप्रसंग व्याख्या

मूल अवतरण:-

चरन-कमल बंदौं हरि-राइ।...
...बार-बार बंदौं हो तिहिँ पाइ।।

प्रस्तुत व्याख्येय पद्यावतरण के रचयिता हिन्दी साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र महाकवि सूरदास हैं। प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्वर्ण-मंजूषा' में संकलित है।

प्रस्तुत पद्य महाकवि सूरदास द्वारा मंगलाचरण स्वरूप रचित है। प्रस्तुत पद्य में कविवर अपने आराध्य की स्तुति करते हुए कहते हैं कि मैं

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)

भगवान के कमल सामान चरणों की वंदना करता हूँ। जिनकी कृपा से लंगड़ा भी पर्वत लाँघ जाता है और अंधे को भी सब कुछ दिखाई पड़ने लगता है, बहरा सुनने लगता है, गूंगा बोलने लगता है तथा अत्यंत निर्धन भी क्षत्रधारी अर्थात सम्राट् बन जाता है। सूरदास जी कहते हैं कि ऐसे कृपालु स्वामी के उन चरणों की मैं बार-बार वंदना करता हूँ।

ध्यातव्य है कि प्रस्तुत पद्य में कवि ने अपने आराध्य की स्तुति सर्वशक्तिमान के रूप में की है, जिनकी इच्छाशक्ति के आगे कुछ भी असंभव नहीं है। अलौकिक दृष्टि से हर असंभव को उनकी कृपा संभव बना सकती है।

बिल्कुल इसी भाव-भूमि पर सगुण भक्तिशाखा के ही महाकवि तुलसीदास ने अपने आराध्य श्रीराम की स्तुति करते हुए मंगलाचरण स्वरूप ही अपने महाकाव्य रामचरितमानस के आरंभ में लिखा है:-

"मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन।
जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन।।"

शाब्दिक अंतर के बावजूद उभयत्र कविहृदय की भावात्मक अभिव्यक्ति समान है।

डॉ० बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य(assist.Prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर, मधुबनी (बिहार)
(ल०ना०मि०वि०वि०दरभंगा की अंगीभूत इकाई)